आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5 अंक : 2 अक्टूबर, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

कुलपति सन्देश

प्रो. बी.आर. छीपा

नवीन तकनीक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही तरक्की संभव

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों!

दीपावली के शुभअवसर पर मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। दीपोत्सव का झिलमिल प्रकाश आपके जीवन में स्वस्थ, सुखी और संपन्नता का संदेश लेकर आए, ऐसी मेरी कामना है। आधुनिक विज्ञान और तकनीक के दौर में कृषि और पशु विज्ञान मेले, संगोष्ठियां, संवाद कार्यक्रम और प्रदर्शनियों का आयोजन हमारे लिए अत्यंत आवश्यक और उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। व्यावसायिक कुशलता के लिए हमारे किसानों और पशुपालकों में वैश्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना जरूरी है। इसी दृष्टिकोण के मद्देनजर राज्य सरकार ने नवम्बर 2016 में ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट, जयपुर का आयोजन किया। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए कोटा संभाग का ग्लोबल राजस्थान एग्री मीट का आयोजन मई 2017 में किया गया। इन सफल आयोजनों से राजस्थान में कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में निवेश के साथ–साथ पशुपालकों व कृषकों को इस क्षेत्र में हो रहे नवाचारों और नवीन तकनीकों को देखने, सीखने और करने का अवसर मिला। वेटरनरी विश्वविद्यालय को इन आयोजनों में ''पशुपालन, पशु चिकित्सा और डेयरी'' विषय पर जाजम–चौपाल, प्रदर्शनी, पशु–शो और राजुवास तकनीक प्रदर्शनी का जिम्मा सौंपा गया जिसे हमने पूरी शिद्दत के साथ पूरा किया। पशु धन संपदा से संपन प्रदेश राजस्थान की धरती देश का गौरव है। यहां का पशुधन किसानों का पूरक व्यवसाय नहीं है बल्कि एक बड़े क्षेत्र में मूल व्यवसाय है। राजस्थान का पशुपालन किसान की आर्थिक स्थिति से सीधे तौर पर जुड़ा है। यह विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण पशुचिकित्सा शिक्षा और कुशल मानव संसाधनों के सृजन के साथ ही सामाजिक सरोकारों के प्रति भी वचनबद्ध है। इसी कड़ी में 6 अक्टूबर, 2017 को वेटरनरी विश्वविद्यालय और उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक, आत्मा, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में एक जिला स्तरीय कृषि एवं पशु विज्ञान मेले का आयोजन किया जा रहा है। इन आयोजनों में हम अपनी भागीदारी सुनिश्चित करके नए जमाने के साथ अपनी विकास की रफ्तार को बनाए रख सकते हैं। अतः ऐसे सुअवसरों का लाभ अवश्य उठाएं।

(प्रो. बी. आर. छीपा)

प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत मिशन में 13 सितम्बर को स्वच्छता पखवाड़े के अन्तर्गत एक दिवसीय स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

मुख्य समाचार

राजुवास प्रदर्शनी को मिला प्रथम पुरस्कार

नेशनल लाइवस्टॉक मिशन के सब मिशन–कौशल विकास प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण और विस्तार के अन्तर्गत लूनकरणसर में शहीद भगतसिंह स्टेडियम में दो दिवसीय जिला स्तरीय पशु मेला व प्रदर्शनी का आयोजन 25–26 सितम्बर को किया गया। इस मेले में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा एक प्रदर्शनी स्टॉल लगायी गई जिसमें स्वदेशी गायों के रंगीन मॉडल और अजोला घास, यूरिया मोलासीस मिनरल ब्लॉक,साइलेज बेग, पशुचारा ईंट, खनिज लवण मिश्रण आदि प्रदर्शित किये गये। इस जिला स्तरीय मेले में राजुवास प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार दिया गया।

जैविक पशुपालन तकनीक पर 65 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 1 सितम्बर को जैविक पशुपालन एवं तकनीक विषय पर 65 पशुपालकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर राजियासर गांव (सूरतगढ़) में आयोजित किया गया। शिविर के संयोजक और प्रमुख अन्वेषक जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र के डॉ. राजकुमार बेरवाल ने बताया कि यह प्रशिक्षण पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ और राजकीय पशु चिकित्सालय, राजियासर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। डॉ. बेरवाल ने जैविक पशुपालन की तकनीकों और जैविक दुग्ध उत्पादन की विस्तृत जानकारी दी। डॉ. विजय कुमार, डॉ. अशोक बैंदा, डॉ. संतपाल सिंह व डॉ. अनिल घोड़ैला ने जैविक पशुपालन और पशु रोगों के उपचार बाबत बताया। जैविक पशुपालन से संबंधित पोस्टर, बुक एवं पैम्पलेट वितरित किये गये। शिविर में पेमाराम सहारण, पूर्व चेयरमैन डेयरी हनुमानगढ़, बलदेव गोदारा पूर्व सरपंच, गुमान सिंह पूर्व जिला परिषद (गंगानगर) सदस्य, नेतराम, व्यवस्थापक राजियासर, प्रगतीशील किसान इन्द्रजीत छींपा, बनवारी लाल पण्डित सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्रीगंगानगर के 50 कृषकों ने राजुवास में पशुपालन तकनीकों की ली जानकारी

कृषि विभाग की 'आत्मा' परियोजना के तहत श्रीगंगानगर जिले के 50 कृषक–पशुपालकों के दल ने 7 सितम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण कर पशुचिकित्सा सेवाओं, रोग निदान उपायों और पशुपालन की आधुनिक तकनीकों का अवलोकन कर जानकारी ली। प्रसार विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि कृषक दल ने जैव विविधिकरण सजीव म्यूजियम, डेयरी फार्म, पोल्ट्री और राजुवास म्यूजियम का अवलोकन कर पशु–पक्षियों के पालन की आधुनिक तकनीक की जानकारी ली। राजुवास क्लिनिक्स में डॉ. जे.पी. कच्छावा ने विभिन्न पशु रोगों की रोकथाम और उपचार उपायों के बारे में बताया। डॉ. संजय ने पोल्ट्री फार्म में पशु–पक्षियों के वैज्ञानिक रखरखाव और पालन की तकनीकों के बारे में जानकारी दी। कृषकों ने राजुवास के पशुधन अनुसंधान केन्द्र में राठी नस्ल की गायों के प्रजनन और संवर्द्धन उपायों को देखा। दल के प्रभारी सहायक कृषि अधिकारी नानूराम शर्मा उनके साथ थे।

डाइयां गांव की महिलाओं को स्वरोजगार प्रशिक्षणः पशु उप स्वास्थ्य केन्द्र शुरू

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए डाइयां गांव की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वरोजगार के प्रशिक्षण कार्यक्रम बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति और गृह विज्ञान महाविद्यालय के सहयोग से शुरू किये जायेंगे। 11 सितम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा की अध्यक्षता में डाइयां की जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक में इस आशय का निर्णय किया गया। कुलपति प्रो. छीपा ने कहा कि गांव की महिलाओं की जरूरतों और संसाधनों की स्थिति के पूर्व आंकलन के बाद स्वरोजगार कौशल प्रशिक्षण शुरू किये जाएं। उन्होंने कहा कि गांव में चिकित्सा और आयुर्वेद चिकित्सा शिविरों में मौसमी और संक्रामक बीमारियों के लक्षण और बचाव उपायों के बारे में भी जागरूक किया जाए। उन्होंने बताया कि गांव में आयुर्वेदिक औषधालय खोलने का प्रस्ताव राज्य सरकार को भिजवाया जाएगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय की पहल पर डाइयां में पशुपालन विभाग द्वारा पशुचिकित्सा उपकेन्द्र स्थापित किया गया है। डाइयां में तालाब निर्माण के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 11.73 लाख रू. राशि और जिला परिषद द्वारा नरेगा में 9 लाख रू. राशि स्वीकृत की गई है। डाइयां में राजुवास द्वारा अजोला प्रशिक्षण और प्रदर्शन और आयुर्वेद विभाग द्वारा आयुर्वेद चिकित्सा और जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जाएगा। वेटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने बताया कि डाइयां को जयमलसर से सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए 8 किमी. लिंक रोड़ का प्रस्ताव राज्य सरकार के विचाराधीन है।

कुक्कुट पालन व उद्यमिता शिविर सम्पन्न

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्याालय, बीकानेर एंव केन्द्रीय कुक्कुट विकास सगंठन, चण्डीगढ के सहयोग से छः दिवसीय कुक्कुट प्रशिक्षण एंव उद्यमिता शिविर का आयोजन विश्वविद्यालय के पशु विविधिकरण सजीव मॉडल द्वारा कुक्कुट शाला में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण संयोजक प्रो. बसन्त बैस ने बताया कि प्रशिक्षण में कुक्कुट आहार प्रबंधन, विभिन्न ऋतुओं में मुर्गियों का प्रबंधन, मुर्गियों के प्रमुख रोग व रोकथाम, अंडों का सरंक्षण एवं ग्रेडिंग, मुर्गी फार्म में काम आने वाले विभिन्न उपकरण, ब्रॉयलर पालन जैसे लाभकारी व्यवसाय के बारे में जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो डॉ. अवधेश प्रताप सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र

प्रदान किए तथा प्रोजेक्ट के अधिकारियों द्वारा तैयार किये गए फोल्डर "भरपूर प्रोटीन का पर्याय:अंडे" का विमोचन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनीत कुमार, प्रभारी केन्द्रीय कुक्कुट संस्थान चण्डीगढ एंव डॉ. छोटे सिंह ढाका प्रभारी पोल्ट्री फॉर्म के द्वारा किया गया। महाविद्यालय के विषय विशेषज्ञों डॉ अंजु चाहर, डॉ अरूण कुमार, डॉ दिनेश जैन, डॉ अशोक कुमार, डॉ राजेश नेहरा, डॉ नीरज शर्मा, डॉ संजय सिंह, डॉ लोकेश टाक द्वारा कुक्कुट प्रबंधन से संबधित विषयों पर व्याख्यान दिए गए।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में जिला स्तरीय प्रदर्शनी एवं किसान मेले का आयोजन 6 अक्टूबर को

वेटरनरी विश्वविद्यालय और उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक 'आत्मा' के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय जिला स्तरीय जिला स्तरीय प्रदर्शनी व किसान मेले का आयोजन आगामी 6 अक्टूबर 2017 को किया जाएगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने बताया कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष जिला स्तरीय मेले का आयोजन वेटरनरी कॉलेज के छात्रावास मैदान में किया जाएगा जिसमें पूरे जिले से किसान और पशुपालक भाग लेंगे। 15 सितम्बर को कुलपति सचिवालय में आयोजित अधिकारियों की बैठक में मेले के भव्य और विशाल आयोजन बाबत दिशा–निर्देश दिये गए। जिला स्तरीय मेले के संयोजक वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह को बनाया गया है। बैठक में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, कृषि विभाग के उपनिदेशक एवं पदेन परियोजना निदेशक श्री बी.आर. कड़वा, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह, कुलपति के प्रशासनिक सचिव प्रो. बी. एन. श्रृंगी, आत्मा के उप परियोजना निदेशक श्री एम.एल. गोदारा और श्री अमर सिंह सहित प्रो. आर.एन. कच्छवाहा ने भाग लिया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय और महावीर इन्टरनेशनल द्वारा निःशुल्क पशु बांझपन निवारण शिविर संपन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग व महावीर इन्टरनेशनल, बीकानेर और लूणकरनसर के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय निःशुल्क पशु बांझपन निवारण शिविर का आयोजन 17 सितम्बर को ढ़ाणी भोपालाराम गांव में किया गया। शिविर का उद्घाटन पंचायत समिति, लूनकरणसर के प्रधान गोविन्द राम गोदारा ने किया। अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के निदेशक क्लिनिक्स प्रो. जे.एस. मेहता ने की। इस अवसर पर प्रधान गोविन्द राम गोदारा ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में पशुओं में होने वाली बीमारी के बारे में उनकी भाषा में ग्रामीणों एवं पशुपालकों को समय–समय पर प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। डॉ. मेहता ने कहा कि इस समय पशुओं के फुराव एवं हीट में नहीं आने, राठी गायों के उंड़ास (शरीर बाहर आना) की समस्या, जैसे रोग अधिक पाये गये है। शिविर में पेट की बीमारी के निवारण हेतु कृमिनाशक दवाइयां एवं विटामिन की खुराक दी गई ।

सीकर जिले के 100 कृषक–पशुपालकों ने वेटरनरी विश्वविद्यालय का किया भ्रमण

सीकर जिले के 100 प्रगतिशील कृषक–पशुपालक और स्वंय सहायता समूह की कार्यकर्त्ताओं का एक दल 19 सितम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में एक दिन के भ्रमण पर पहुँचा। जलग्रहण प्रबंधन परियोजना के तहत सीकर जिले की लक्ष्मणगढ़ पंचायत समिति ब्लॉक के दल में 50 महिलाएं शामिल थी। दल के सदस्यों ने विश्वविद्यालय में हरे चारे उत्पादन की हाइड्रोपोनिक्स तकनीक, अजोला चारा और वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन इकाईयों को देखकर पूरी जानकारी प्राप्त की। पशु पोषण विभाग में कृषक–पशुपालकों को सहायक प्राध्यापक डॉ. दिनेश जैन ने पोषण से भरपूर फीड ब्लॉक और साइलेज निर्माण के बारे में बताया। डॉ. सीताराम गुप्ता ने पशुशाला में अवशेषों का सदुपयोग करने पर व्याख्यान दिया। दल के सदस्यों ने राजुवास म्यूजियम का अवलोकन कर पशु शल्य चिकित्सा और रेडियोग्राफी और औषधीय विभाग में पशुओं के उपचार की आधुनिक चिकित्सा तकनीकों को देखा। राजुवास के डॉ. सीताराम गुप्ता ने कृषक और पशुपालकों को भ्रमण करवाया।

विज्ञान, अध्यात्म एवं विवेकानन्द पर कोटा में व्याख्यान

स्वामी विवेकानन्द शोधपीठ एवं सह आयोजक राजुवास द्वारा विज्ञान अध्यात्म एवं विवेकानन्द पर कोटा विश्वविद्यालय में 19 व 20 सितम्बर 2017 को प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह ने पंचगव्य विषय पर आमंत्रित सदस्य के रूप में व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 1, 5, 8, 11 एवं 13 सितम्बर को गांव देपालसर, कालाना ताल, बेरासर छोटा, कुसुमदेसर एवं लम्बोरबड़ी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 1, 6, 8, 16 एवं 19 सितम्बर को गांव राजियासर, सिधुवाला कलेरिया, 23 बीबी, सरदारपुरा लाड़ाना एवं लाठावाली गांवो में एक दिवसीय तथा दिनांक 13–14 को दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 47 महिला पशुपालकों सहित 201 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा 212 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 11, 14, 16, 18, 22 एवं 25 सितम्बर को गांव चन्डेला, अनादरा, माकरोड़ा, रोहुआ, वरमान, झाडोली–वीर एवं पोसालिया गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 212 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 4, 5, 8 एवं 22 को गांव पावटा, छापरी खुर्द, शेखाबासनी एवं दुजार गांवों में एक दिवसीय तथा 6–7, 12–13, 14–15 एवं 19–20 सितम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 222 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण : 202 पशुपालक हुए लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 12, 13, 15, 20, 23 एवं 26 सितम्बर को गांव कनोज, देवगांव, तेलाड़ा, सूरजपुरा, नरबदखेडा, फतेहगढ़, अजगरी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 202 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 13, 15 एवं 16 सितम्बर को गांव झापा, चक महुडी एवं सुरपुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 147 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 8, 11, 13, 15, 18, 20, 22, 23 एवं 25 सितम्बर को गांव झारोटी, रातुआ, चान्दोली, मदनपुर, रारौदा, पाली, रोसीयाका, भण्डारा, भोंसिगा एवं गुरगुरिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 23 महिला पशुपालकों सहित कुल 217 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 8, 11, 12, 13, 14 एवं 15 सितम्बर मोटूका, जोनला, ढाडिया, सांखना, मीरनगर एवं गैरोली गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 166 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

240 पशुपालकों का लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण सम्पन्न

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 12, 14, 15, 20, 22 एवं 23 सितम्बर को गांव दुलमेरा, खोखराना, मेहराना, नाकोदेसर, रांवासर एवं चांदसर गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का तथा 7–8 सितम्बर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 240 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 8, 13, 14, 26 एवं 29 सितम्बर को गांव सुवाना, डंगावत, पाडलिया, लालाहेड़ा, मोती कुआ एंव कराडिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 170 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 7, 8, 11, 12, 15, 16, 18, 19 एवं 22 सितम्बर को गांव जोधपुरिया, देकड़ी खेड़ा, मोथा, उखालिया, झाड़सादडी, चारलिया, सांगरिया, गरदाना एवं जीतावल गांवों में तथा दिनांक 26 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 359 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 11, 13, 15, 18, 20, 22 एवं 23 सितम्बर को गांव रसीलपुर, सोलह खम्बा, सियपुरा, शंकरापुरा, नयापुरा, दोनारी, डोंगरपुर एवं छितापुरा गांवों में तथा दिनांक 26 सितम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 376 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा दिनांक 4, 14, 24, 25, 26 सितम्बर को गांव मोमावास,पाचरवाली, एल.आर.एस नोहर, रामगढ, परलिका गांवो में एक दिवसीय कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविर में 305 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

अक्टूबर माह में पशुओं की देखभाल

सितम्बर के बाद अक्टूबर माह में मौसम में काफी बदलाव आ जाता है, साथ ही इस माह दीपावली का उत्सव भी है। अतः इस माह पशु पालकों को अपने पशुओं की विशेष देखभाल की आवश्यकता होगी। इस समय विषाणुजनित रोग जैसे गौवंश व भैंसों में तीन दिन का बुखार, ऊंट व भेड–बकरियों में माता रोग, भेड़–बकरियों में पी. पी. आर. और सभी पशुओं में खुरपका मुंहपका मुख्य रूप से प्रभावित करते हैं। ये रोग ग्याभन व कमजोर पशुओं को ज्यादा प्रभावित करते हैं। अतः ऐसे पशुओं की विशेष देखभाल की जानी चाहिए। विषाणुजनित रोगों के बारे में पशु पालकों को कुछ जानकारी होना आवश्यक है, क्योंकि इससे इन रोंगों से बचाव में मदद मिलती है। यह रोग अचानक पशु को प्रभावित करते हैं, तेज बुखार आता है, उत्पादन एकदम से निम्न स्तर पर पहुँच जाता है और बहुत ही तेजी से स्वस्थ पशुओं में फैलता है। इसके अतिरिक्त माता रोग में पूरे शरीर पर छोटी–छोटी फुंसिया बन जाती है जो कई अवस्थाओं से गुजर कर अंत में घाव में बदल जाती है, जिससे पशु की कार्यक्षमता बुरी तरह प्रभावित होती है और पशु अधिकांशतः न्यूमोनिया का भी शिकार हो जाता है।

इसी प्रकार खुरपका–मुहंपका रोग में मुंह एवं खुरों के बीच में घाव हो जाते हैं और छोटे बछड़े–बछडिया मौत का शिकार हो जाती है। भेड़–बकरियों में पी.पी.आर. रोग के कारण मुंह में छाले, आँख नाक से पानी गिरना, दस्त, गर्भपात इत्यादि मुख्य लक्षण हैं। माता, पी.पी.आर. और खुरपका मुंहपका रोगों से बचाव के लिए टीके उपलब्ध हैं। अतः पशु पालकों को चाहिए कि स्थानीय पशु चिकित्सक से संपर्क कर उचित समय पर पशुओं को टीके लगवाएं और अपने पशुधन की रक्षा करें। रोग के फैलाव को रोकने के लिए बीमार पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग कर दें और इलाज के लिए तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

इस महीने दीपावली का उत्सव भी है और प्रायः इन दिनों आतिशबाजी का माहौल रहता है, विशेषरूप से बच्चे पटाखे इत्यादि छोड़ते हैं। इस शोर में पशुओं में डर और तनाव की स्थिति रहती है। जिससे पशुओं के उत्पादन में कमी आती है और पशु परेशान रहते हैं। इन दिनों घास–फूस के छप्पर में आग लगने से पशुओं के जलने की दुर्घटना भी काफी देखने को मिलती है अतः पशु पालकों को चाहिए कि हर समय शोर–शराबा न हो और इस समय छप्पर को चिंगारी या आग से बचाने के लिए विशेष ध्यान रखें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पौष्टिक आहार में देशी दुग्ध पदार्थों की महत्ता

पौष्टिक आहार में सभी पौष्टिक तत्व जैसे कार्बोहाईड्रेट, वसा, प्रोटीन, खनिज पदार्थ एवं विटामिन विद्यमान होते हैं। यह सभी पौष्टिक तत्व दूध में मिलते हैं तो हम यह कह सकते है कि दूध अपने आप में पूरक आहार हैं इसलिए दूध एवं दूध से बने दुग्ध पदार्थो का हमारी दैनिक आहार तालिका में विशेष महत्व है। जहां पर दूध की उपलब्धता अधिक होती है वहां पर दूध से बने दुग्ध पदार्थो का नियमित रूप में सेवन किया जाता है। दूध की पौष्टिकता को देखते हुये, दूध के उत्पादन को बढ़ाने के लिये लगातार कोशिशें की जा रही हैं। कई राज्यों में दूध को अतिरिक्त आहार के रूप मे आंगनवाड़ी एवं स्कूलों में बांटा जाता है।

आम आदमी के औसतन आहार की तालिका में ज्यादातर पौष्टिक तत्वों का आमतौर पर आहार में, दूध एवं दूध से बने दुग्ध पदार्थो को शामिल करने की कोशिश की जा सकती है। दूध को उबालकर पीने की आदत हम सभी लोगों में हैं। दूध उबालने से बीमारी फैलाने वाले जीवाणु नष्ट हो जाते हैं लेकिन उसमें प्रोटीन की गुणवत्ता भी क्षीण हो जाती है और साथ में विटामिन–सी एवं विटामिन बी–1 भी कम हो जाते हैं। आईये, अब हम दूध से बने दुग्ध पदार्थो की पौष्टिकता के बारे में जानें कि इसमें कौन–कौन से पौष्टिक तत्व पाये जाते हैं जो कि एक सन्तुलित आहार के लिए आवश्यक हैं–

1. **दही**:– दूध से बनने वाले दुग्ध पदार्थो में दही का हमारे भोजन में विशेष महत्व है। इसमें वसा 6–8 प्रतिशत, प्रोटीन 3.5–4.0 प्रतिशत, लैक्टोस 4.6–5.2 प्रतिशत एवं खनिज लवण 0.70–0.72 एवं लैक्टिक एसिड 0.5–1.1 प्रतिशत अनुपात में पाया जाता है। दही एक ऐसा उत्पाद है जो कि दूध की पाच्यता की क्षमता को बढ़ा देता है। दही को लैक्टोस–असहय वाले लोगों के आहार में शामिल किया जा सकता है। दही में कैल्शियम, फास्फोरस, सोडियम एवं पौटाशियम ज्यादा मात्रा में मिलता है। यह खनिज पदार्थ शरीर में होने वाली पाचन क्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दूध से मिलने वाला कैल्शियम, सब्जियों से मिलने वाले कैल्शियम की अपेक्षा शरीर में अच्छी तरह से घुलता है। दही से लस्सी, कढी एवं श्रीखंड बनाकर हम अपने भोजन की और भी पौष्टिकता को बढ़ा सकते हैं।
2. **मक्खन एवं घी**:– दूध से बने मक्खन एवं घी उत्पाद हमारे आहार तालिका के वसा की तीसरे हिस्से (1.0–1.5) की पूर्ति को पूरा करते हैं। मक्खन में वसा 78–81 प्रतिशत, दही 1–1.5 प्रतिशत, लैक्टिक एसिड 0.2 (99.0–99.5) प्रतिशत के अनुपात में मिलता है। इस तरह भैंस के दूध से बने घी में वसा 99.0–99.5 प्रतिशत, फ्री फैटीएसिड 1–3 प्रतिशत एवं कैराटीन, विटामिन ए, विटामिन ई आदि पाये जाते हैं, लेकिन घी को 125 डिग्री से. से ऊपर गर्म करने से उसमें विटामिन ए एवं कैरोटीन नष्ट हो जाते हैं।
3. **खोआ, छैना एवं पनीर** :– खोआ एवं पनीर दोनों ही उत्पाद मिठाईयां बनाने के लिये आधारित मिश्रण है।

खोआ से बर्फी, कलाकन्द, पेड़ा, गुलाबजामुन आदि बनाये जाते हैं और छैना से रसगुल्ला एवं रसमलाई बनाये जाते हैं। पनीर से छैनामुर्की एवं गुलाबजामुन भी बनाये जाते है। खोआ में वसा 37.1 प्रतिशत, प्रोटीन 17.8 प्रतिशत, लैक्टोस 22.1 प्रतिशत एवं खनिज लवण 3.6 प्रतिशत एवं कुछ मात्रा 20.8 में लोहा भी मिलता है। छैना में वसा 20:, प्रोटीन 18.3 प्रतिशत, लैक्टोस 1.2 प्रतिशत खनिज लवण 2.6 प्रतिशत पाये जाते हैं। इसी प्रकार पनीर में वसा 28.30:, प्रोटीन 13–15 प्रतिशत, लैक्टोस 2.2–2.4 प्रतिशत

एवं खनिज लवण 1.9–2.1 प्रतिशत तक पाये जाते हैं। शोध कार्यो से यह सिद्ध हो गया कि खोआ, छैना, पनीर से प्राप्त वसा, वनस्पति तेल एवं घी की अपेक्षा ज्यादा पाचनशील एवं तैयार ऊर्जा प्रदान करती है। दुग्ध पदार्थो में प्रोटीन के साथ कैल्शियम एवं विटामिन–बी अधिक मात्रा में मिलते हैं जो कि हड्डियों एवं चमड़ी के लिये अच्छे होते हैं दूध की प्रोटीन में सभी आवश्यक अमीनो एसिड होते हैं जो कि बच्चों की बढ़ोत्तरी एवं दिमाग की शक्ति को बढ़ाने में मदद करते हैं। खोआ में पाया जाने वाला कार्बोहाईड्रेट लैक्टोस के रूप में मिलता है। लैक्टोस, शरीर में कैल्शियम के अवशोषण की क्रिया को मजबूत करता है और हमारी हड्डियों को मजबूत बनाता है। पनीर में लैक्टोस कम होने से इसे मधुमेह के रोगी भी खा सकते हैं। पनीर बनाने के बाद बचे हुए पानी (व्हे) में काफी पौष्टिक तत्व होते है जो कि व्यर्थ जाते हैं पनीर के पानी को सब्जियों, दालों एवं आटा गुथंने के काम में लाना चाहिए। अगर ज्यादा पानी हो तो पशुओं को भी दे सकते है। खोआ, छैना एवं पनीर में पाये जाने वाले महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ कैल्शियम, फास्फोरस, सोडियम एवं पौटेशियम है यह खनिज पदार्थ शरीर में होने वाली क्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दुग्ध पदार्थो से मिलने वाला कैल्शियम सब्जियों से मिलने वाले कैल्शियम की अपेक्षा शरीर में अच्छी तरह से इस्तेमाल होता है।

खोआ, छैना एवं पनीर में पाये जाने महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ फास्फोरस, सोडियम एवं पोटेशियम है। यह खनिज पदार्थ शरीर में होने वाली पाच्य क्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दुग्ध पदार्थो से मिलने वाला कैल्शियम सब्जियों से मिलने वाले कैल्शियम की अपेक्षा शरीर में अच्छी तरह से इस्तेमाल होता है। दूग्ध–पदार्थो से मिलने वाले विटामिनों का बच्चों, युवाओं की बढोत्तरी में महत्वपूर्ण योगदान है। दूध, विटामिन बी–2 एव बी–12 का अच्छा स्त्रोत है। इसके साथ दूसरे विटामिन भी पाये जो है। विटामिन ए–आंखों के लिए, विटामिन डी–हड्डियों के लिए एवं बी–ग्रुप के विटामिन, बी–2, बी–12 केवल दूग्ध पदार्थो से ही मिलते हैं। यह विटामिन उन लोगों के लिये उपयोगी है जो शाकाहारी हैं। शोध कार्यों से यह पता चला है कि बच्चों के आहार फोलिक भोजन में 40 प्रतिशत तक विटामिन–ए, बी–2, बी–6 एवं एसिड की कमी पाई जाती है इसलिये बच्चों को स्कूल में मध्यकाल में दूध या सोया आधारित पेय पदार्थो के साथ ज्यादा से ज्यादा सब्जियां, फल, अनाज से बने पदार्थ शामिल करने चाहिए। सब्जियों एवं गाजर से मिलने वाली कैरोटीन के अवशोषण में दूध का महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए हम कह सकते हैं कि दुग्ध पदार्थो में सभी पौष्टिक तत्व होते हैं जो कि बच्चों, युवाओं, वृद्धों, गर्भवती एवं दूध पिलाने वाली महिलाओं के लिए लाभदायक है।

प्रो. बंसत बैस, (मो. 9413311741)
दुर्गादेवी, डॉ. परमाराम गोरछिया,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पारंपरिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा अध्ययन केन्द्र

पुराने समय में ''एलोपैथिक चिकित्सालय'' उपलब्ध नहीं थे और आधुनिक पशुचिकित्सा करने वाले चिकित्सक केवल शहर तक सीमित थे। उस समय पशुपालक पारंपरिक नुस्खों और पुरखों के बताये गए अनुभवों के आधार पर अपने आस–पास उपलब्ध पेड़–पौधों, जड़ी–बूटी और अन्य स्त्रोतों से औषधि बनाकर देशी पद्धति से अपने पालतू पशुओं में रोगों के उपचार और बचाव के लिए कारगर चिकित्सा करते थे। परंपरागत रूप से चले आ रहे पशुचिकित्सा के तौर–तरीकों व फॉर्मूलों से उपचार को हम इथ्नो–वेटरनरी या नृजातीय पशुचिकित्सा या पारंपरिक पशुचिकित्सा कहते हैं और बोलचाल की भाषा में 'देशी उपचार' कहते हैं। इसी प्रकार आधुनिक एलोपैथी चिकित्सा पद्धति अथवा बोलचाल की भाषा में अंग्रेजी चिकित्सा को छोड़कर बाकी चिकित्सा पद्धतियों जैसे की आयुर्वेदिक या भारतीय चिकित्सा, यूनानी, होम्योपैथी, चीनी अथवा तिब्बती चिकित्सा पद्धतियां ''वैकल्पिक चिकित्सा'' या ''ऑल्टर्नेटिव मेडिसिन'' के नाम से जानी जाती हैं। ये पद्धतियां अनेक रोगों के कारगर उपचार के लिए विश्व स्तर पर भी अपनी उपयोगिता के लिए विख्यात हैं।पारंपरिक पशुचिकित्सा या देशी पशुचिकित्सा के नुस्खों के प्रकाशनों की कमी के कारण अधिकतर लोगों की जानकारी में नहीं हैं। प्रचार–प्रसार में कमी और अंग्रेजी दवाओं के प्रभाव के कारण वर्तमान में उपलब्ध देशी उपचार की जानकारी भी दिनों–दिन कम होती जा रही है।

इस प्रकार के ज्ञान व जानकारी को इक्ठ्ठा करने, सहेजने और वैज्ञानिक विधि से उसके कारगर होने का सत्यापन करने के उद्देश्य से, राजस्थान सरकार के सौजन्य से, राजुवास में 'सेंटर फॉर इथ्नो–वेटरनरी प्रैक्टिसेज एंड ऑल्टरनेटिव मेडिसिन' या हिन्दी में ''पारंपरिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा अध्ययन केन्द्र'' की स्थापना की गयी है। यह केन्द्र विश्व विद्यालय परिसर में स्थित पशु जैवरसायन विज्ञान विभाग के भवन के प्रथम तल पर पशु भेषज विज्ञान एवं विष विज्ञान विभाग के साथ संचालित हो रहा है। केन्द्र की प्रयोगशाला में जाने–माने औषधीय पौधों जैसे अश्वगंधा, तुलसी, गिलोय, इत्यादि के विभिन्न फॉर्मूलों/नुस्खों और इनके विभिन्न औषधीय निष्कर्षों के पशुचिकित्सा में उपयोग के वैज्ञानिक सत्यापन पर खोज कार्य किया जा रहा है। अध्ययन केन्द्र में देशी जड़ी–बूटियों पर स्नातकोत्तर और विद्या वाचस्पति स्तर का अनुसंधान कार्य संपन्न होता है। केन्द्र में विकसित ''हर्बल लोशन'' का विभिन्न पशुओं में त्वचा रोगों के उपचार हेतु किया गया उपयोग अत्यंत सफल रहा है। राजस्थान की शुष्क जलवायु में विकसित होने वाले स्थानीय औषधीय पौधों की भी पशुचिकित्सा में उपयोगिता प्रतिपादित करने हेतु भी केन्द्र अनुसंधान कार्य कर रहा है। गौरबतलब है कि राजुवास एवं इसके पशुचिकित्सा संकुल में आने वाले पशुपालक भाई भी देशी ईलाज के प्रयोगों के अपने अनुभव उत्साहपूर्वक इस केन्द्र के साथ एवं मुख्य अन्वेषक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह के साथ साझा कर रहे हैं और साथ ही देशी उपचार के सफल प्रयोगों की जानकारी से लाभान्वित हो रहे हैं। यह अध्ययन केन्द्र, पंचगव्य उत्पादों के वैज्ञानिक विधि से निर्माण हेतु भी शोध कार्य भी कर रहा है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अक्टूबर, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, झुंझुनू, धौलपुर, सवाई–माधोपुर, अलवर, अनूपगढ़, जयपुर, बांसवाड़ा, अजमेर, बीकानेर, चूरू
पी.पी.आर. (PPR)	बकरी, भेड़	हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, सीकर, सवाई–माधोपुर, सिरोही, पाली, जयपुर, श्रीगंगानगर
चेचक (Pox)	बकरी, भेड़	जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैंस, गाय	जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, अलवर, धौलपुर, झुंझुनू, हनुमानगढ़
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस (Pneumonic Pasteurolosis)	गाय, भैंस,	सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, बांसवाड़ा, भरतपुर
ठप्पा रोग (Black Quarter)	भैंस, गाय	जैसलमेर, जयपुर, बीकानेर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़
फड़किया (Enterotoxaemia)	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, धौलपुर, भीलवाड़ा
Enzootic Abortion in Ewes (EAE) / Chalmydial Abortion	भेड़	बीकानेर, नागौर
सर्रा (तिबरसा) (Trypanosomiais)	ऊंट, भैंस	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, झालावाड, पाली
रक्त प्रोटोजोआ थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस (Theileriosis and Babesiosis)	भैंस, गाय	बांसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सवाई– माधोपुर, जयपुर, पाली, चूरू, अलवर
अन्तः परजीवी (पर्ण–कृमि, गोल–कृमि, फीता–कृमि)	बकरी, भेड़, ऊंट, भैंस, गाय	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, सीकर, बीकानेर, उदयपुर, चूरू,
खुजली (Mange)	ऊंट, बकरी	बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, पाली, झुंझुनू, जोधपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी ऊँट वंश को पहचानें
मेवाड़ी ऊँट : गौरव प्रदेश का

मेवाड़ी ऊँट मुख्यतया उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कोटा जिलों तथा अरावली की पहाड़ियों में पाया जाता है। यह पहाड़ी ऊँट से विकसित हुआ है तथा छोटी–छोटी पहाड़ियों पर आसानी से चढ़ जाता है। मध्यप्रदेश व गुजराज राज्यों के राजस्थान से लगे क्षेत्रों में भी यह नस्ल पायी जाती है। मेवाड़ी ऊँट का शरीर छोटा व भार में हल्का व रंग हल्का भूरा होता है। इसके शरीर पर खुरदरे बालों की मोटी परत होती है जो इसे कीटों मुख्यतया मधुमखियों से बचाती है। इसके कान छोटे व मोटे होते है। निचला होंठ नीचे की ओर लटका रहता है जिससे इसके दांत दिखाई देते रहते है। इनका नथूना ढ़ीला व पूंछ लम्बी होती है।

मेवाड़ी नस्ल के वयस्क ऊँट ऊंचाई व लम्बाई क्रमशः 193 से.मी. व 158 से.मी. होती है। मादा ऊँट साढ़े पांच से 6 साल की उम्र में ब्याह जाती है। इसका गर्भकाल 13 महीने होता है। इसका अयन गोल व दुग्ध शिरायें बहुत उभरी हुई होती है। मेवाड़ी ऊँट की नस्ल को दुग्ध उत्पादन व भार ढोने के लिए पाला जाता है। प्रतिदिन 5–7 किलो दूध का उत्पादन होता है तथा दुग्ध काल 14–16 माह होता है। इनके दूध का प्रयोग मुख्यतयाः चाय व कॉफी बनाने में किया जाता है। प्रतिवर्ष लगभग 700 ग्राम बालों का उत्पादन हो जाता है। कम उम्र के ऊँटों से अच्छी गुणवत्ता के बाल मिलते है जिनका प्रयोग कम्बल बनाने में किया जाता है तथा बेड़ ऊँटों के बालों से कालीन बनाई जाती है।

सफलता की कहानी
पशुपालन से खेती की आय हुई दोगुनी

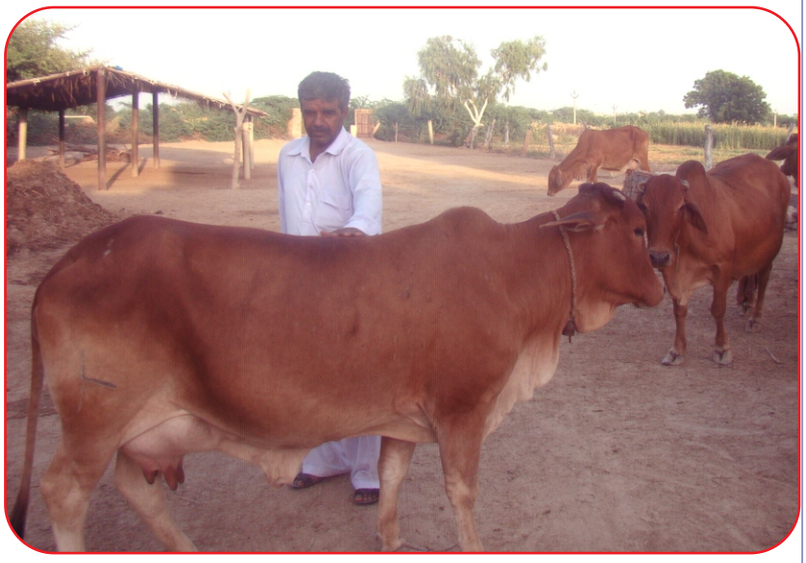

हमारे राज्य में पशुपालन की आदर्शतम स्थितियां मौजूद हैं। यह कम पूंजी, लागत और मेहनत में एक भरोसेमंद व्यवसाय है जो राज्य के कृषकों को कमजोर मानसून की स्थिति और सूखे के हालात में सदैव एक सम्बल प्रदान करने वाला है लूनकरणसर तहसील बीकानेर निवासी किसान नारायण राम गोदारा ने पशुपालन और बागवानी को अपनाकर समझदारी का परिचय दिया है। 58 वर्षीय नारायण राम के पास 25 बीघा कृषि भूमि है लेकिन वर्षा आश्रित कृषि में पैदावार कम होने के कारण पशुपालन एवं बागवानी को आजीविका के रूप में अपनाया जिससे इनको सफलता प्राप्त हुई है और आज वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने हैं। इन्होंने पशुपालन की शुरुआत 3 राठी नस्ल की गायों से की। वर्तमान में इनके पास 22 गायें, 10 बछड़े व 2 सांड है जिनसे प्रतिदिन 170–180 लीटर दूध उत्पादन कर विक्रय करते हैं। वे विगत एक वर्ष से पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान लूनकरणसर से जुड़े हुए हैं और पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी भाग लेते हैं। उन्होंने उन्नत व वैज्ञानिक पशु प्रबंधन, पोषण, टीकाकरण, कृमिनाशक दवा पिलाने आदि विषयों पर गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वे दूरभाष पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु भी पशुपालन विशेषज्ञों के सम्पर्क में रहते हैं। बागवानी में उनके पास संतरा, आंवला, अमरुद, आम, पपीता, हाइब्रिड खेजड़ी, बेरी तथा सजावटी पौधे हैं। प्रशिक्षण उपरांत उन्नत तकनीक से पशुपालन करने पर उनकी आय में काफी वृद्धि हुई है। आज उनकी आय खेती से होने वाली आय से दुगुनी हो गयी है। नारायण राम डेयरी व्यवसाय बढ़ाकर बहुत खुश हैं और समृद्ध है। अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवारजों एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण अनुसंधान लूनकरणसर को देते हैं। वे पशुपालन से आर्थिक स्वावलंबन की यह एक मिशाल बने हैं और बेरोजगार घूम रहे युवाओं के लिये भी प्रेरणा के स्त्रोत हैं। **(सम्पर्क : नारायण राम गोदारा, 2 आरडी चक , लूनकरणसर, मो. 8239820243)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

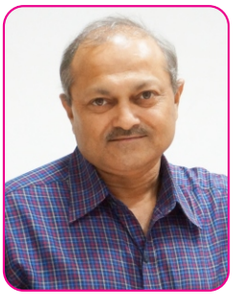

पशुपालन में समृद्धि के लिए खनिज मिश्रण का उपयोग जरूरी है

प्रिय किसान और पशुपालक भाइयों और बहनों! दीपावली के पावन पर्व पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

पशुपालन में सुख और समृद्धि के लिए स्वस्थ पशुधन का अधिक उत्पादक होना आवश्यक है। पशु स्वास्थ्य की पूरी देखभाल, समय पर रोगनिरोधक टीकाकरण और संतुलित आहार से हम उत्पादन बढा सकते हैं। पशु आहार में खनिज मिश्रण मिलाकर पशुओं की उत्पादन और प्रजनन क्षमता को बढाया जा सकता है। खनिज मिश्रण की कमी के कारण प्रजनन में देरी, बांझपन, ताव में नहीं आना, ग्याभिन पशुओं में शरीर का बाहर आना, कमजोर संतति पैदा होना और दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी जैसे विकार पैदा हो सकते हैं। आहार में सभी तरह के खनिज तत्व कम अथवा अधिक मात्रा में पाए जाते हैं, लेकिन खनिजों का महत्व शरीर के विकास, कंकाल तंत्र, प्रजनन व शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए जरूरी है। कैल्शियम, फास्फोरस, सोडियम, पोटेशियम, मैग्निशियम, सल्फर, क्लोरीन वृहत खनिज तत्वों में शामिल है। लोहा, आयोडीन, मैग्नीज, तांबा, कोबाल्ट, जस्ता, सैलीनियम, क्रोमियम और मोलीबडेनम आदि विरल खनिज तत्वों में आते हैं। वृहत खनिज तत्व वह है जो शरीर में ज्यादा उपयोग में आते हैं। विरल तत्वों की जरूरत शरीर की विभिन्न क्रियाओं में कम मात्रा में होती है। विटामिन भी शरीर की सामान्य वृद्धि और विकास के लिए बहुत जरूरी है। इससे शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति उत्पन्न होती है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के स्नात्तकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर द्वारा क्षेत्रीय विशिष्ट खनिज मिश्रण के पैकेट्स तैयार किये जाते हैं। खनिज मिश्रण को पशु आहार में अवश्य उपयोग में लाएं। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अक्टूबर, 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. ए.पी. सिंह** **9414139188** निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	पंचगव्य एवं उनकी उपयोगिता	05.10.2017
2	**डॉ. अरूण कुमार झीरवाल** **9461300587** एल.पी.एम विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	ब्रायलर पालन : एक लाभप्रद व्यवसाय	12.10.2017
3	**डॉ. अतुलशंकर अरोड़ा** **9784511656** वी.यू.टी.आर.सी., कोटा	उन्नत पशुपालन तकनीकों की महत्ता	19.10.2017
4	**डॉ. सूदीप सोलंकी** **9950854959** वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही	मुर्गीपालन में जीवाणु जनित रोग एवं उनका बचाव	26.10.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। → **1800 180 6224**